नन्दलाल बसु की कला पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव

डॉ0 बबीता शर्मा

असि0 प्रोफे0, चित्रकला विभाग, आई0 एन0 पीजी कालिज, मेरठ

सारांश

गाँधी जी शरीरधारी मानव के लिए पूर्णरूपेण अहिंसा का पालन अंसभव मानते हैं। उनके अनुसार 'पूर्ण अहिंसा युक्लिड के बिन्दु और सरल रेखा के समान है जो पूर्णतः सैद्धान्तिक है। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी गाँधी जी सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा के समुचित प्रयोग के पक्षधर थे अपने जीवन काल में उन्होंने ऐसा किया भी। सामाजिक जीवन में वर्णभेद या ऊंच–नीच का भाव रखना सामाजिक हिंसा का स्थूल रूप है। अतः सामाजिक जीवन में अपने व्यक्तिगत निरंकुश आवेगों को मर्यादित एवं विवेकपूर्ण नियमन एवं नियंत्रण के द्वारा समाज को संतुलित रखने की उत्तरोत्तर अभ्युदयवान क्रिया को ही अहिंसा कहते हैं। गाँधी जी के अनुसार राज्य अनिवार्य हिंसा का प्रतीक है। अतः राजनैतिक क्षेत्र में राज्य से अराज्य की ओर क्रमिक गति अहिंसा के उत्तरोत्तर विकास को स्पष्ट करती है। गाँधी जी का यह दृढ़ विश्वास है कि मानव अपने मूल स्वभाव में एक अहिंसक प्राणी है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा आज भी व्यापक रूप में समाज में व्याप्त है। जिस प्रकार पृथ्वी गुरूत्वाकर्षण के प्रभाव से बंधकर अपनी कक्षा में स्थित है, उसी प्रकार सारा समाज अहिंसा के सूत्र में बधां है। गाँधी जी का उददेश्य समाज को अहिंसा के रहस्यों को ज्ञानपूर्वक अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करना है। गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से अहिंसा के सक्रिय प्रयोग और उसके संगठन का प्रयास किया। गाँधी जी की अहिंसा के इस युद्ध में साथ देने में भारतीय कलाकार भी पीछे नहीं है। इस स्वतन्त्रता के आंदोलन में नन्दलाल बसु और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी सहयोग दिया। भारत जैसे देशों में जिसका इतिहास ही उसकी कला और संस्कृति से जुड़ा हुआ हो वहां जब कला के क्षेत्र से जुड़ा कोई भी व्यक्ति अपना हुनर दिखाता है तो उसे युगों–युगों तक याद किया जाता है, वह है नन्दलाल बसु। उनके प्रसिद्ध चित्रों में –डांडीमार्च, संथाली कन्या, सती का देह त्याग आदि शामिल है।

Reference to this paper
should be made as follows:

डॉ0 बबीता शर्मा,
नन्दलाल बसु की कला पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.22- 27
http://anubooks.com/
?page_id=485

अहिंसा एक निषेधात्मक शब्द है। अतः अहिंसा को प्रायः निषेधात्मक अर्थ में ही व्याख्यायित किया जाता है जिसके अनुसार किसी जीवन की हत्या न करना या मनसा, वाचा और कर्मणा जीवमात्र को हानि न पहुंचाना ही अहिंसा है। गाँधीजी के लिये अहिंसा की पूर्ण व्याख्या उसके भावात्मक अर्थों में निहित है। भावात्मक अर्थों में वे अहिंसा को सक्रिय व अधिकतम प्रेम कहते है। उनके शब्दों में– “In this positive form ahinsa means the largest love, the greatest charity.”

गाँधी जी शरीरधारी मानव के लिए पूर्णरूपेण अहिंसा का पालन अंसभव मानते हैं। उनके अनुसार 'पूर्ण अहिंसा युक्लिड के बिन्दु और सरल रेखा के समान है जो पूर्णतः सैद्धान्तिक है। अतः उनके लिए व्यवहारिक जीवन में अहिंसा के पूर्ण पालन का अर्थ है प्रगतिशील अहिंसा। इसके अनुसार अहिंसा की सिद्धि के लिए पूर्ण मनोयोग से किया प्रयास ही पर्याप्त है। सत्य की खोज में गाँधीजी को अहिंसा की उपलब्धि हुई उन्होनें अहिंसा का सर्वप्रथम प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में किया। तत्पश्चात भारत की स्वतन्त्रता के लिए इसे शस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी गाँधी जी सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा के समुचित प्रयोग के पक्षधर थे अपने जीवन काल में उन्होंने ऐसा किया भी। उनके शब्दों में – मैं अहिंसा और उसकी संभावनाओं को लगातार पिछले पचास से अधिक वर्षों से वैज्ञानिक परिशुद्धता के साथ अमल में ला रहा हूँ। मैनें इसे घरेलू सांस्थानिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन के हर क्षेत्र में लागू किया है और मुझे एक भी ऐसा उदाहरण याद नहीं आता जब यह असफल रही हो। इस प्रकार गाँधी जी के लिए अहिंसा समाज और जगत से परे कोई चीज नहीं है। यदि अहिंसा हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन की बुराइयों का निराकरण नहीं कर सकती तो बेकार है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि 'जो सद्‌गुण जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी न हो, उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता।'

सामाजिक जीवन में वर्णभेद या ऊंच–नीच का भाव रखना सामाजिक हिंसा का स्थूल रूप है। अतः सामाजिक जीवन में अपने व्यक्तिगत निरंकुश आवेगों को मर्यादित एवं विवेकपूर्ण नियमन एवं नियंत्रण के द्वारा समाज को संतुलित रखने की उत्तरोत्तर अभ्युदयवान क्रिया को ही अहिंसा कहते हैं।

आर्थिक क्षेत्र में परिग्रह और व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना ही हिंसक भावना है। इसका अर्थ हुआ कि व्यक्तिगत स्वामित्व का निराकरण और अपरिग्रह का पालन एक अहिंसक विधान है।

गाँधी जी के अनुसार राज्य अनिवार्य हिंसा का प्रतीक है। अतः राजनैतिक क्षेत्र में राज्य से अराज्य की ओर क्रमिक गति अहिंसा के उत्तरोत्तर विकास को स्पष्ट करती है। इसके लिए आवश्यक है कि ग्राम पंचायतों को अधिक से अधिक स्वायत्ता दी जाये और राज्य पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को समाप्त किया जाये।

हिन्द स्वराज्य नामक पुस्तक में गाँधी जी ने आधुनिक सभ्यता की जो तीखी आलोचना की है। वह वस्तुतः विभिन्न प्रकार के शोषण पर आधारित हिंसक समाज की ही आलोचना है। वर्तमान समाज–रचना सत्ता, सम्पत्ति और अधिकारों को केन्द्रित करने वाली व शोषण को बढ़ावा देने वाली है। गाँधी जी के इस तथ्य को समझा। इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों से मिली स्वतन्त्रता को राजनैतिक स्वतन्त्रता के रूप में सच्चे स्वराज की ओर केवल एक कदम बताया। वे इस राजनैतिक स्वतन्त्रता का उपयोग

शोषण–रहित अहिंसक–समाज रचना के लिये करना चाहते हैं।

गाँधी जी का यह दृढ़ विश्वास है कि मानव अपने मूल स्वभाव में एक अहिंसक प्राणी है। उनके मत में 'अहिंसा उसी प्रकार से मानवो का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। अतः अहिंसा को मानव के लिए निर्मित प्राकृतिक नियम मान लेने पर स्पष्ट हो जाता है कि मानव समाज का संगठन भी अहिंसा पर ही आधारित होना चाहिए। गांधी जी के अनुसार अहिंसा आज भी व्यापक रूप में समाज में व्याप्त है। जिस प्रकार पृथ्वी गुरूत्वाकर्षण के प्रभाव से बंधकर अपनी कक्षा में स्थित है, उसी प्रकार सारा समाज अहिंसा के सूत्र में बधां है। गाँधी जी का उददेश्य समाज को अहिंसा के रहस्यों को ज्ञानपूर्वक अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करना है।

अहिंसा का सिद्धान्त महात्मा जी ने नया नहीं निकाला। वह तो एक धार्मिक मन्तव्य के रूप में भारत में सदियों से मौजूद था। लेकिन जैसा कि श्री ब्रेल्सफोर्ड ने कहा है–उन्होंने पश्चिमी शिक्षा–दीक्षा और आचरण की लहर के विरोध में उसकी पुनः स्थापना की और इस प्रकार अपने देशवासियों के नेता के रूप में उनकी नैतिक शक्ति अत्यन्त प्रभावशाली हो उठी। गाँधी जी द्वारा निर्दिष्ट एकादश व्रतों का पालन आत्मशुद्धि में सहायक है और आत्मशुद्धि की यह प्रक्रिया ज्ञानयुक्त अहिंसा को जन्म देती है। जिस अनुपात में यह प्रकिया पूर्ण होती है उसी अनुपात में अहिंसा की प्राप्ति होती चलती है। गाँधी जी का अंतिम लक्ष्य संपूर्ण समाज की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के स्रोत हैं। गाँधी जी का अंतिक लक्ष्य संपूर्ण समाज की नैतिक और आध्यात्मिक चेतना को आत्म साक्षात्कार के स्तर तक उठाना है। यद्यपि इस स्थिति को उन्होंने आदर्श ही माना है जिसकी प्राप्ति असंभव है। गाँधी जी के अनुसार हम जितना आदर्श की ओर बढ़ते है वह उतना ही हमसे दूर होता जाता है। किन्तु मानव का लक्ष्य अधिक से अधिक पूर्णता करना ही होना चाहिए जो अहिंसा की सिद्धि के बिना असंभव है।

गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से अहिंसा के सक्रिय प्रयोग और उसके संगठन का प्रयास किया। रचनात्मक कार्यक्रमों के मूल में अहिंसा का बीज विद्यमान है। नारी उद्धार, बुनियादी तालीम, खादी, कौमी एकता, मघनिषेध आदि रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से अहिंसा सामाजिक बुराईयों का निराकरण करती है और ऐसी समाज–रचना को प्रोत्साहित करती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने सद्गुणों का स्वाभाविक विकास कर सके और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बन सके।

गाँधी जी की अहिंसा के इस युद्ध में साथ देने में भारतीय कलाकार भी पीछे नहीं है। इस स्वतन्त्रता के आंदोलन में नन्दलाल बसु और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी सहयोग दिया। भारत जैसे देशों में जिसका इतिहास ही उसकी कला और संस्कृति से जुड़ा हुआ हो वहां जब कला के क्षेत्र से जुड़ा कोई भी व्यक्ति अपना हुनर दिखाता है तो उसे युगों–युगों तक याद किया जाता है, वह है नन्दलाल बसु। नन्दलाल बसु का जन्म 3 दिसम्बर 1882 को बिहार के खड़गपुर में एक बंगाली परिवार में हुआ। उनके पिता पूर्णचंद्र बोस आर्किटेक्ट तथा महाराजा दरभंगा की रियासत के मैनेजर थे, शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें अनेक विद्यालयों में भर्ती कराया गया। पर वे पढ़ाई में मन न लगने के कारण सदा असफल होते। उनकी रूचि आरंभ से ही चित्रकला की ओर थी। उन्हें यह प्रेरणा अपनी मां क्षेत्रमणि देवी से मिटटी के खिलौने आदि बनाते देखकर मिली।

प्रख्यात साहित्यकार अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के शिष्य नंदलाल का झुकाव शुरू से ही कला के क्षेत्र में था। वह कला के क्षेत्र में ही शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन उनके परिवार द्वारा इसकी अनुमति नहीं मिली। परिणाम यह हुआ कि कला में रूचि होने की वजह से उनका मन दूसरे विषय में बिल्कुल नहीं लग रहा था। आखिरकार नंदलाल की कला विद्यालय में भर्ती कराया। इस प्रकार 5 वर्ष तक उन्होंने चित्रकला की विधिवत शिक्षा ली, उन्होंने 1905 से 1910 के बीच कलकत्ता गवर्नमेंट कालेज ऑफ आर्ट में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर से कला की शिक्षा ली। इंडियन स्कूल ऑफ आर्ट में अध्यापन किया और 1922 से 1951 तक शांति निकेतन के कलाभवन के प्रधानाध्यापक रहे।

चित्रकारी से जुड़े होने की वजह से नंदलाल का संपर्क रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अलावा आनंद कुमार स्वामी भगिनी निवेदिता आदि से हुआ। उनके चित्रों की प्रंशसा देश–विदेश में होने लगी थी और धीरे–धीरे चित्रकार के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त कर ली। नंदलाल अजंता के चित्रों से काफी प्रभावित थे। इसलिए इन चित्रों की प्रतिकृति भी बनाना शुरू किया। वह शुरू–शुरू में पौराणिक विषयों और नर–नारी के चित्र अधिक बनाते थे। लेकिन बाद में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं के आधार पर जीवन की समस्याओं से संबंधित चित्र बनाने लगे। चित्रकार नंदलाल गाँधीजी और सुभाषचन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू के अत्यंत प्रिय थे। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का भी उनकी कला पर प्रभाव पड़ा। उन्होंने कांग्रेस अधिवेशनों के पैनल बनाए और महात्मा गाँधी का लाइफ साइज रेखा चित्र बनाया जो बहुत प्रसिद्ध हुआ।

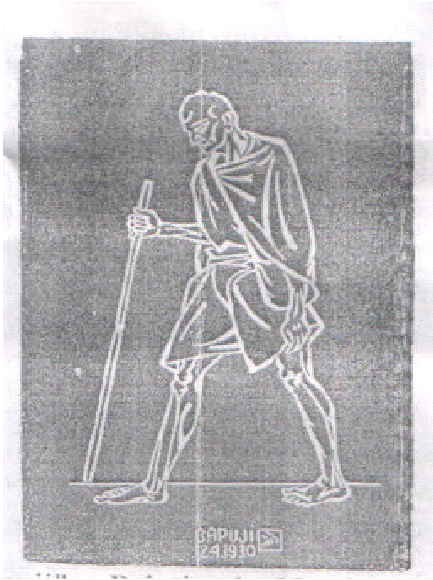

नंदलाल बोस की कृति

नंदलाल बसु को इस बात के लिए भी जाना जाता है कि उन्हें भारतीय संविधान की मूलप्रति को अपनी चित्रों से सजाने का मौका मिला। यह मौका उन्हें देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेंहरू

ने दिया। 221 पेज के इस दस्तावेज के हर पन्नों पर तो चित्र बनाना संभव नहीं था। नंदलाल जी ने संविधान के हर भाग की शुरूआत में 8–13 इंच के चित्र बनाए। संविधान में कुल 22 भाग है। इस तरह उन्हें भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को अपने चित्रों से सजाने का मौका मिला। इन 22 चित्रों को बनाने में चार साल लगे। चित्रकार नंदलाल के इस काम की प्रशंसा हुई। उन्हें तब इस काम के लिए 21,000 मेहनताना भी दिया गया।

उनके प्रसिद्ध चित्रों में –डांडीमार्च, संथाली कन्या, सती का देह त्याग आदि शामिल है। नंदलाल बोस ने चित्रकारी और कला अध्यापन के अतिरिक्त तीन पुस्तिकाएं भी लिखी– रूपावली, शिल्पकला और शिल्प चर्चा। उनकी उपलब्धि को देखते हुए 1954 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पदमविभूषण' से सम्मानित किया गया। 16 अप्रैल 1966 को इस महान और विश्वविख्यात चित्रकार का देहांत हो गया। इन्होंने अपनी चित्रकारी के माध्यम से आधुनिक आंदोलनों के विभिन्न स्वरूपों, सीमाओं और शैलियों को उकेरा। जिसे शांति निकेतन में बड़े पैमाने पर रखा गया। निःसंदेह नंदलाल बसु की चित्रकारी में एक अजीब सा जादू था। जो किसी को भी बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। उनकी चित्रकारी में खूबसूरती की एक अमिट छाप दिखाई पड़ती थी। बोस के पेंटिग तकनीक भी कमाल की थी जिसका कोई जवाब नहीं है। नंदलाल बोस की पेंटिग का एशिया में बहुत प्रभाव था। हालांकि उनकी चित्रकारी को पश्चिम में भी काफी तवज्जों मिला है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के चित्रों के बारे में बातचीत की शुरूआत, रवीन्द्रनाथ के समय को बिना जांचे–परखे संभव नहीं है। ऐतिहासिक बंग–भंग और स्वदेशी आंदोलन के अंतिम दौर में कलकत्ते में इंडियन सोसायटी ऑफ आरिएण्टल आर्ट की स्थापना हुई थी। एक लम्बे समय से भारत में चित्रकला की शिक्षा यूरोपीय चित्रकला से आयातित तरीकों और नियमों के आधार ही होती आ रही थी। इंडियन सोसाइटी की स्थापना भारतीय चित्रकला को विदेशी प्रभावों से मुक्त करने के साथ–साथ नव भारतीय चित्रकला के स्वरूप का निर्धारण करने के लिये हुआ था। इस संस्था का मानना था कि भारत महादेश के विभिन्न प्रांतों में फैली सदियों पुरानी कला धाराओं का अध्ययन कर और उसे आधार मानकर ही नई भारतीय कला के स्वरूप का निर्धारण संभव है।

इण्डियन सोसायटी ऑफ आरिएण्टल आर्ट की स्थापना में ठाकुर परिवार का महत्वपूर्ण योगदान था। ठाकुर परिवार ने भी गाँधीजी के अहिंसा के आंदोलन में सहयोग कर अपनी कला के माध्यम से उसे प्रेरित किया। गाँधीजी ने अहिंसा पालन के लिए कुछ पूर्व शर्तों का भी उल्लेख किया है। इन शर्तों के अपनाये बिना अहिंसा की उपलब्धि संभव नहीं है। इन शर्तों में से कुछ उल्लेख इस प्रकार से है–

सत्याचरण–मनसा–वाचा–कर्मणा सत्य का पालन अहिंसा का प्रथम पूर्व शर्त है। गाँधीजी के अनुसार सत्याचरण करने वाला व्यक्ति अधिक समय तक हिंसा नहीं कर सकता। गाँधी जी के शब्दों में अहिंसा और कायरता कभी एक साथ नहीं चल सकते। उसके अनुसार कायरता से हिंसा अच्छी है। इसलिए वे कहते हैं– जहां केवल कायरता और हिंसा में से एक चुनाव करना है वहां मैं हिंसा को चुनूंगा। अतः स्पष्ट है कि विशुद्ध निर्भीकता के बिना सच्ची अहिंसा संभव है। इसके अतिरिक्त भय अनिवार्य रूप से हिंसा और शोषण को उत्पन्न करता है। अतः अभय को अहिंसा की पूर्वशर्त कहा गया है।

ईश्वर–आस्था–गाँधीजी के अनुसार ईश्वर में जीती जागती आस्था न हो तो अहिंसा में जीती जागती आस्था हो ही नहीं सकती। ईश्वर की उपस्थिति का भाव मनुष्य को निर्भीक बनाता है और वह अहिंसा पालन के लिए सर्वस्व अर्पित करने को तैयार रहता है।

उपरोक्त पूर्व शर्तों का पालन अहिंसा के व्यवहारिक आचरण को सहज बनाता है और अहिंसक समाज रचना के लिए उसके सक्रिय प्रयोग को भी सुनिश्चित करता है।

संक्षेप में गाँधीजी ने अहिंसा को उसके व्यापक रूप में परिभाषित किया। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा के अनुप्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया कि यह केवल धर्म या नीति का विषय नहीं है अपितु मानव का स्वाभाविक गुण होने के कारण मानवीय व्यवहार का अभिन्न अंग है। जीवन के चरम आदर्श की प्राप्ति अहिंसा की सिद्धि से ही संभव है। गाँधीजी का दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति, संस्था समाज, राष्ट्र एवं समस्त विश्व अहिंसा के ज्ञान युक्त आचरण द्वारा लाभान्वित हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गांधी, एम0 के0– द लॉ ऑफ लव, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, 1970, पृ0 14
2. मित्रा, एस0 के0 – द एथिक्स ऑफ द हिन्दूज, यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, पृ0 11।
3. हरिजन 21–7–40
4. यंग इडिया 4–11–26
5. मशरूवाला, गाँधीविचार दोहन, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2001, पृ0 16।
6. प्रभु आर0 के राव यू0 आर महात्मा गाँधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 1994, पृ0 12।
7. सिंह, रामजी, गाँधीदर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, द्वितीय संस्करण, 1986, पृ0 96।
8. प्रभु आर0 के0 राव यू0 आर0, उपरोक्त पृ0 121।
9. कला दीर्घा अप्रैल 2011 वर्ष अंक 22, पृ0 20।
10. हरिजन 15–7–38।
11. मशरूवाला कि उपरोक्त पृ0 7।
12. सर्वपल्ली राधा कृष्णन, गाँधी अभिनन्दन ग्रंथ, सत्साहित्य प्रकाशन 1955, पृ0 175।
13. यंग इडिया 11–8–20
14. कला दीर्घा अप्रैल 2012 वर्ष अंक 23, पृ0 32।
15. हरिजन 18–6–38।